

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 10, पाप का समकालीन महत्व

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10 है, पाप का समकालीन महत्व। महोनी, आज के लिए पाप का धर्मशास्त्र: पाप का बाइबिल विवरण।

हम पाप के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं। डीए कार्सन का निबंध हमें इस विषय से परिचित कराता है, पाप का समकालीन महत्व, वह इसे कहते हैं, और वह अभी तक उस बिंदु तक नहीं पहुंचे हैं, लेकिन पाप और कानून।

उन्होंने ईश्वर और शैतान के काम से जुड़े पाप के बारे में बात की है, और फिर पाप, वे इसे विभिन्न धार्मिक निर्माणों, पाप और मनुष्य के सिद्धांत, पाप और मोक्ष के सिद्धांत, नृविज्ञान, उद्धारशास्त्र, पाप और पवित्रीकरण, चौथा, पाप और कानून से जुड़ा हुआ कहते हैं। जॉन हमें बताता है कि पाप अधर्म है, 1 यूहन्ना 3:4। हालाँकि कुछ लोगों ने इस घोषणा को पाप की एक बहुत ही उथली परिभाषा के रूप में खारिज कर दिया है, वास्तव में, यह एक दर्दनाक अंतर्दृष्टि है जब हम याद करते हैं कि किसका कानून ध्यान में है। वैचारिक रूप से, यह इस कहावत से बहुत दूर नहीं है कि जो कुछ भी विश्वास का नहीं है वह पाप है।

एक बार जब आप याद करते हैं कि यह कौन है और हमारे विश्वास का विषय कौन होना चाहिए, तो यह यीशु के इस आग्रह से बहुत दूर नहीं है कि सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा ईश्वर को हृदय, आत्मा, मन और शक्ति से प्रेम करना है। एक बार जब हम समझ जाते हैं कि यह हमेशा एक ऐसी आज्ञा है जिसे तब तोड़ा जाता है जब हम ईश्वर की किसी अन्य आज्ञा को तोड़ते हैं, तो यह हमें दिखाता है कि कानून का उल्लंघन पाप की एक अच्छी परिभाषा है। पाप की घृणा ईश्वर और उसके कानून की अवहेलना में निहित है।

फिर भी पाप और कानून के बीच का रिश्ता जटिल है। यह कई धुरी पर चलता है। पहला जो हमने अभी स्पष्ट किया है वह यह है कि पाप परमेश्वर के कानून को तोड़ रहा है और इसलिए स्वयं परमेश्वर की अवहेलना कर रहा है।

इसमें वह सब करना शामिल है जो परमेश्वर आज्ञा देता है और वह सब करना जो परमेश्वर मना करता है। सामान्य स्वीकारोक्ति के शब्दों में, हमने कुछ भी नहीं छोड़ा है, हमने उन चीजों को नहीं किया है जो हमें करनी चाहिए थीं, और हमने उन चीजों को किया है जो हमें नहीं करनी चाहिए थीं, और हमारे अंदर कोई स्वास्थ्य नहीं है, उद्धारण बंद करें। हालाँकि, दूसरी धुरी के साथ कल्पना की गई, कानून वास्तव में पाप को उकसाता है, इसे बाहर निकलने के लिए प्रेरित करता है।

दूसरे शब्दों में, पाप हृदय से इतना विद्रोही है कि आज्ञाएँ और निषेध, पापियों को उनके पाप पर विजय पाने में सक्षम बनाने के बजाय, एक अपरिपक्व किशोर के मन और हृदय पर एक नियम के समान प्रभाव डालते हैं। फिर से संशोधित करके, कानून को न केवल इस मनोवैज्ञानिक तल पर बल्कि छुटकारे के इतिहास की धुरी पर काम करते हुए देखा जा सकता है। मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाप सिनाई में कानून दिए जाने से बहुत पहले से ही प्रचुर मात्रा में मौजूद है, रोमियों 5 :13-14, इस तरह कि जब कानून को मूसा के माध्यम से दिए गए रहस्योद्घाटन के रूप में माना जाता है, तो कानून दृश्य पर अपेक्षाकृत देर से आता है।

लेकिन इसके कई कार्यों में से एक है तम्बू, मंदिर, पुरोहिती, बलिदान प्रणाली और त्यौहारों जैसे फसह और प्रायश्चित्त दिवस की जटिल संरचनाएँ स्थापित करना, ये सभी हमें यीशु तक ले जाने वाले मार्ग स्थापित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जो अंतिम मंदिर, अंतिम पुजारी, अंतिम बलिदान, अंतिम फसह, प्रायश्चित्त के अंतिम दिन अंतिम रक्त बलिदान है। इस प्रकार, व्यवस्था यीशु को लाती है, जो पाप को नष्ट करता है। यह हमें सुसमाचार तक ले जाता है, जो अकेले ही परमेश्वर की शक्ति है और उद्धार लाता है।

पाप के संबंध में व्यवस्था की कई भूमिकाएँ हैं, लेकिन इसमें पापी को उसकी गुलामी करने वाली शक्ति और उसके परिणामों से मुक्त करने की शक्ति नहीं है। पवित्रशास्त्र में निहित प्रत्येक महत्वपूर्ण धार्मिक निर्माण के साथ पाप के संबंधों को प्रदर्शित करना आसान होगा। वे जितने भी महत्वपूर्ण हैं, उनमें से कुछ की जाँच करना ही पर्याप्त होगा।

पर्याप्त है। दुख और बुराई को समझने के लिए पाप पर चिंतन आवश्यक है। पाँचवाँ, सभी गंभीर धार्मिक चर्चाओं में पाप की सर्वव्यापकता को प्रदर्शित करने का एक और तरीका धार्मिक विश्लेषण में इसके स्थान को रेखांकित करना है जो कि अब तक बताए गए धार्मिक निर्माणों की तुलना में अधिक संश्लेषणात्मक और द्वितीय-क्रम है।

हम केवल एक उदाहरण देंगे। पिछले आठ या दस वर्षों के दौरान तीन या चार मौकों पर, कार्सन कहते हैं कि उन्होंने थियोडोसी, ईश्वर के विरुद्ध बुराई की समस्या पर एक लंबा व्याख्यान दिया है। मैंने इसे कभी ऐसा नहीं कहा; वे कहते हैं कि इसका हमेशा कुछ ऐसा शीर्षक होता था कि ईसाइयों को दुख और बुराई के बारे में कैसे सोचना चाहिए।

मैंने जो करने की कोशिश की, वह था छह प्रमुख स्तंभों को जमीन में गाड़ना। इन छह स्तंभों को एक साथ लेने पर, बुराई और दुख पर चिंतन करने के एक विशिष्ट ईसाई तरीके का समर्थन करने के लिए पर्याप्त आधार प्रदान किया। छह को एक साथ लिया जाना था।

एक खंभा अपने आप में पूरी तरह अपर्याप्त था, और चार या पांच खंभे भी खतरनाक रूप से कमज़ोर थे और संरचना को खराब तरीके से सहारा देते थे। दिलचस्प बात यह है कि सभी खंभों का संबंध पाप से है। दिलचस्प बात यह है कि कार्सन की इमारत के सभी खंभे हमें यह समझने में मदद करते हैं कि दुख और बुराई का पाप से क्या संबंध है।

पहला स्तंभ जिसे मैंने लेबल किया है, वह है बाइबल की शुरुआत से सबक। इसमें सृष्टि शामिल है, जिसमें भगवान सब कुछ बनाते हैं, जिसमें विवाह भी शामिल है, मनुष्य को भगवान के अधीन

शासन करने की जिम्मेदारी सौंपते हैं, उन्हें एक रमणीय सेटिंग से घेरते हैं, और सबसे बढ़कर, अपनी खुद की उपस्थिति, और सब कुछ अच्छा घोषित करते हैं। कथा पतन, मूर्तिपूजा की शुरुआत, पाप, और इसके अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभावों, जिसमें मृत्यु और भगवान से अलगाव दोनों शामिल हैं, और विभिन्न पक्षों पर घोषित अभिशाप और उनका क्या मतलब है, तक आगे बढ़ती है।

क्रूर तथ्य यह है कि मनुष्य ने अपने निर्माता ईश्वर से यह उम्मीद करने का अधिकार खो दिया है कि वह उनसे प्यार करेगा और उनकी देखभाल करेगा, इसलिए यदि वह ऐसा करता है, तो यह इसलिए है क्योंकि वह उनसे कहीं अधिक दयालु है। शास्त्रों में इन विषयों को जिस तरह से छेड़ा गया है, उस पर धार्मिक चिंतन हमें याद दिलाता है कि सभी युद्ध, घृणा, वासना, लोभ, और सभी अपराध, मूर्तिपूजा, पाप और मानव विद्रोह, यहाँ तक कि जिसे हम प्राकृतिक आपदाएँ कहते हैं, वह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण पश्चाताप के लिए एक अंतर्निहित आह्वान है। यीशु के अनुसार, लूका 13 :1 से 5, ईश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ होने से बहुत दूर, पाप निर्माता ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह है।

धर्मशास्त्र के लिए इसके कई निहितार्थ हैं, सबसे पहले इस तथ्य से कि ईश्वर हमें आशीर्वाद, समृद्धि और स्वास्थ्य देने का ऋणी नहीं है। वह हमें न्याय देने का ऋणी है, जो अपने आप में हमारे विनाश की गारंटी देता है। हालाँकि, इस निबंध के उद्देश्य के लिए मेरा कहना यह है कि यह स्तंभ, बाइबिल के परिदृश्य में यह फिक्स, पाप से मजबूती से बंधा हुआ है।

बाइबल में पाप के बारे में जो कुछ कहा गया है, उससे जूझें बिना बाइबल के प्रति आस्थावान तरीके से थियोडिसी की जटिलताओं के बारे में लंबे समय तक नहीं सोचा जा सकता। और यह सिर्फ पहला स्तंभ है। दूसरा बाइबल के अंत से सबक है, जहाँ हमें नरक, नए स्वर्ग, नई पृथ्वी, पुनरुत्थान, अस्तित्व, नए यरूशलेम, एक ऐसी दुनिया के बारे में सोचना चाहिए जहाँ कोई भी अशुद्ध चीज़ कभी प्रवेश नहीं करेगी। कोई बहुत आगे नहीं बढ़ता है इससे पहले कि वह पहचान ले कि चर्चा फिर से पाप के विषय पर घूम रही है।

तीसरा स्तंभ प्रोविडेंस का रहस्य है। यहाँ, कोई न केवल उन कई ग्रंथों से जूझता है जो ईश्वर की संप्रभुता के बारे में बात करते हैं, बल्कि उन ग्रंथों से भी जूझता है जो पाप से अत्यधिक प्रभावित दुनिया पर ईश्वर की संप्रभुता के बारे में बात करते हैं।

सभी छह स्तंभों पर काम करना और एक सुव्यवस्थित और बाइबिल के प्रति वफादार थियोडिसी के समर्थन में उनके योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत करना आसान होगा, लेकिन हर मामले में मुद्दा यह है कि अगर कोई पाप पर गहन चिंतन से उन्हें अलग करने की कोशिश करता है तो इन स्तंभों का कोई मतलब नहीं है। संक्षेप में, पाप सभी गंभीर धार्मिक चर्चाओं में सर्वव्यापी है। यह पवित्रशास्त्र से संकेत लेता है।

संक्षेप में, अगर हमें आज की संस्कृति में पाप के सिद्धांत की प्रासंगिकता के बारे में यथार्थवादी ढंग से सोचना है, तो हमें इसके आंतरिक महत्व से शुरू करना होगा, बाइबिल द्वारा निर्धारित

धार्मिक चिंतन के मैटिक्स के भीतर पाप का स्थान। वाह ! इस निबंध का दूसरा भाग बहुत संक्षिप्त है। पाप का समकालीन।

सबसे पहले, पाप का अंतर्निहित महत्व। अब, पाप का समकालीन महत्व। इस शीर्षक के अंतर्गत, मैं कुछ तरीकों पर ध्यान केंद्रित करूंगा जिसमें पाप के बारे में बाइबल के अनुसार विश्वासयोग्य सिद्धांत हमारे अपने युग और हमारे अपने ऐतिहासिक स्थान की कुछ विशेषताओं को संबोधित करता है।

मैं तीन बिंदुओं का उल्लेख करूंगा। पहला, हम असाधारण हिंसा और दुष्टता के दौर में जी रहे हैं। पहला, सबसे खूनी सदी को समाप्त हुए अभी केवल 13 साल ही हुए हैं।

मानव इतिहास की सबसे खूनी सदी को समाप्त हुए अभी केवल 23 वर्ष ही हुए हैं। यह केवल एक नरसंहार नहीं है। यहूदियों के नाजी नरसंहार, 20 मिलियन यूक्रेनियों की स्टालिनवादी भुखमरी, शायद, शायद हम इसे माप भी नहीं सकते, 50 मिलियन चीनी लोगों का माओवादी नरसंहार, कंबोडिया की एक चौथाई से एक तिहाई आबादी का नरसंहार, तुत्सी और हुतु का जनजातीय नरसंहार और विभिन्न जातीय सफाए को इसमें जोड़ दें।

आतंकवाद के सभी रूपों, अनियंत्रित उपभोक्तावाद, शराब सहित विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के दुरुपयोग से होने वाले नुकसान, भौतिक और मनोवैज्ञानिक, की गणना हम कैसे करेंगे? डिजिटल क्रांति जो अनुसंधान, डेटा हैंडलिंग और संचार में शानदार सुधार लाती है, वह हमें तत्काल पोर्न तक भी पहुँच प्रदान करती है, जो सामान्य रूप से पुरुष-महिला संबंधों और विशेष रूप से विवाहों को अनगिनत नुकसान पहुँचाती है। क्या हम नस्लवाद की क्रूरता, कमजोरों का शोषण, और लालच और आलस्य को उनके सभी रूपों में जोड़ दें? और उन बड़े और सर्वव्यापी पापों का क्या जो मुख्य रूप से विशेष गुणों की अनुपस्थिति हैं? अपवित्रता, अधर्म, प्रार्थना न करना, प्रेमहीन हृदय, कृतघ्नता। मुझे लगने लगा है कि ये व्याख्यान अब काफी निराशाजनक हो सकते हैं।

अरे! हमारे इर्द-गिर्द हर तरफ मौजूद भारी सबूतों के बावजूद, हमारी पीढ़ी के कई लोग खुद को मूल रूप से अच्छे लोग मानते हैं। पोलीअननिश दृष्टिकोण बहुत ज़्यादा है। अगर दुनिया में बुरी चीज़ें हैं, तो वे मुख्य रूप से दूसरे लोगों द्वारा की जाने वाली चीज़ें हैं।

अन्य धर्म, अन्य जातियाँ, अन्य राजनीतिक दल, अन्य पीढ़ियाँ, अन्य आर्थिक क्षेत्र और अन्य उपसंस्कृतियाँ। निस्संदेह हर पीढ़ी खुद को वास्तविकता से बेहतर समझती है, लेकिन पश्चिमी दुनिया में, इस पीढ़ी ने इस तरह के नैतिक अंधेपन को उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका के संस्थापक पिताओं ने शक्तियों के विभाजन और जाँच और संतुलन की प्रणाली के साथ एक संविधान का निर्माण करने का एक कारण यह था कि उनका मानना था कि व्यापक पाप, विशेष रूप से सत्ता की लालसा को कम करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।

इसके विपरीत, हमारे समाज में बहुत से लोग उन खतरों के बारे में भी नहीं जानते हैं जो हर जगह छिपे रहते हैं जब सरकार या समाज का एक या दूसरा हिस्सा बहुत ज़्यादा प्रभाव जमा लेता है। संक्षेप में, पाप के एक मज़बूत सिद्धांत का प्रचार करने का पहला और सबसे स्पष्ट समकालीन महत्व यह है कि यह ऐसी शिक्षा की लगभग सार्वभौमिक अनुपस्थिति का सामना करता है। दूसरे शब्दों में, पाप पर बाइबिल की शिक्षा का पहला समकालीन महत्व यह नहीं है कि यह समकालीन विश्वदृष्टि के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है और इसलिए, विचारशील बातचीत में एक सुखद तरीका प्रदान करता है, बल्कि वास्तव में, यह पाप की दर्दनाक रूप से विकृत अनुपस्थिति और जागरूकता का सामना करता है।

मुक्ति इतिहास की धारा के पार, यह कानून का प्राथमिक कार्य था: पाप का बोध कराना। हालाँकि सुधारवादी परंपरा में कई प्रचारकों ने गलातियों 3 को इस तरह से माना है जैसे कि यह अनिवार्य करता है कि व्यक्तियों को सुसमाचार का प्रचार करने का तरीका कानून से शुरू करना है, यह आश्वासन देते हुए कि कानून हमारा संरक्षक है, पिडागोगोस गलातियों 3:24, हमें मसीह और अनुग्रह की आवश्यकता को समझने में मदद करता है। संदर्भ की सावधानीपूर्वक जांच से पता चलता है कि अध्याय का ध्यान व्यक्ति के परिवर्तन में व्यवस्था की भूमिका पर नहीं बल्कि उद्धार के इतिहास के नाटक में व्यवस्था की भूमिका पर है।

यदि अब्राहम को दिए गए वादे के बारे में पौलुस की समझ सही है, पद 1 से 4, तो कोई यह पूछ सकता है कि आखिर व्यवस्था क्यों दी गई। पद 19, वादे से लेकर पूर्ति तक बहुत जल्दी क्यों नहीं दौड़ी जाती? विभिन्न स्थानों पर, पौलुस उस प्रश्न के कई पूरक उत्तर देता है, लेकिन उत्तर का एक हिस्सा यह है कि पवित्रशास्त्र में व्यवस्था ने, उद्धारण, सब कुछ पाप के नियंत्रण में बंद कर दिया ताकि जो वादा किया गया था, यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से दिया जा सके, उन लोगों को दिया जा सके जो विश्वास करते हैं गलातियों 3:22। फिर भी यह तथ्य कि व्यवस्था वाचा को लगभग डेढ़ सहस्राब्दी तक शासन करना चाहिए, यह दर्शाता है कि दृढ़ता, पुनरावृत्ति, जघन्यता, गुलाम बनाने वाली शक्ति, और मानव पाप की घृणा, और मनुष्यों की इससे मुक्त होने की पूर्ण अक्षमता को व्यक्त करना परमेश्वर के लिए कितना महत्वपूर्ण था। मानव विद्रोही परमेश्वर से अनुग्रह के लिए कैसे रोएंगे, सिवाय विश्वास के जो वादा किया गया था? इसी प्रकार, एक पीढ़ी जो अपने पाप के प्रति पूर्णतया अनभिज्ञ है, तथा पाप में डूबी हुई है, उसे भी मुक्ति को समझने के लिए पाप के सुदृढ़ सिद्धांत की अत्यंत आवश्यकता है।

दूसरा, उत्तरआधुनिकतावाद की बुराई को पहचानने में अनिच्छा। दूसरा, आज, उत्तरआधुनिकतावाद को परिभाषित करने और उसका बचाव करने वाली किताबें 15 साल पहले की तुलना में कम प्रकाशित हुई हैं। यूरोप में, अब लगभग कोई भी माइकल फौकॉल्ट को नहीं पढ़ता, जैक्स डेरिडा की तो बात ही छोड़िए।

कुछ अमेरिकी स्नातक छात्रों को अभी भी उत्तर आधुनिकतावाद की जहरीली खुराक दी जाती है, लेकिन स्नातकोत्तर छात्रों ने इस दवा से तेजी से दूरी बना ली है। एक परिष्कृत ज्ञानमीमांसा और सांस्कृतिक घटना के रूप में, पश्चिमी दुनिया के कई हिस्सों में उत्तर आधुनिकतावाद अपनी समाप्ति तिथि पार कर चुका है। फिर भी, उत्तर आधुनिकतावाद का मलबा, विनाश के परिणाम और कचरा हर जगह देखा जा सकता है।

सबसे ज़्यादा ध्यान देने वाली बातें वे हैं जो बुराई की पहचान करने में अनिच्छुक हैं, मुख्यतः इस धारणा पर कि सही और गलत, अच्छा और बुरा, सामाजिक निर्माणों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं। ऐसा माहौल पाप के बारे में बात करने के लिए आदर्श सांस्कृतिक संदर्भ नहीं लग सकता है। नैतिक सापेक्षवाद की संबंधित बुराई बाइबल में पाप के बारे में जो कहा गया है, उस पर वायरल चिंतन के लिए बहुत अनुकूल नहीं लगती।

फिर भी, एक बार फिर, यह इसकी आवश्यकता है जो पाप पर बाइबिल के चिंतन को इतना प्रासंगिक बनाती है। पाप की श्रेणी के खिलाफ गहरी सांस्कृतिक दुश्मनी का मतलब है कि कई प्रचारक कमजोरियों, गलतियों, त्रासदियों, असफलताओं, असंगतियों, चोटों, निराशा, अंधेपन और पाप के अलावा किसी भी चीज़ के बारे में बात करना पसंद करते हैं। इसका परिणाम यह है कि परमेश्वर का बाइबिल चित्रण विकृत है, जैसा कि उसके छुटकारे की योजना है।

इस संस्कृति में पाप के बारे में बाइबल क्या कहती है, यह बताना बेशक बहुत मुश्किल है। दूसरे तरीके से देखा जाए तो यही कठिनाई पाप के प्रति सख्त व्यवहार की जरूरत और इसलिए समकालीन महत्व का माप है। तीसरा, नई सहिष्णुता का सर्वोच्च गुण।

तीसरा, ऐसे कई मुद्दे सामने आए हैं जिन्हें पाप के बारे में बाइबल के सुविचारित सिद्धांत के बिना आसानी से संबोधित नहीं किया जा सकता। इनमें से एक है सहिष्णुता पर वर्तमान ध्यान, लेकिन सहिष्णुता को नए सिरे से परिभाषित और नए तरीके से स्थापित किया जाना। डीए कार्सन ने 2012 में एक किताब लिखी, *द इन्टॉलरेंस ऑफ टॉलरेंस*।

हे भगवान। यह नई स्थिति है जो इस समय हमारा ध्यान आकर्षित कर रही है। अतीत में, किसी भी संस्कृति में सहिष्णुता की चर्चा किसी व्यापक रूप से सहमत या थोपी गई मूल्य प्रणाली, धार्मिक या अन्यथा के सापेक्ष की जाती थी।

एक बार जब संस्कृति में मूल्य प्रणाली स्थापित हो गई, तो अनिवार्य रूप से सवाल उठने लगे कि कानूनी, न्यायिक या अन्य बलपूर्वक प्रतिबंधों का सामना करने से पहले कोई व्यक्ति इससे कितनी दूर तक अलग हो सकता है। सीमाओं के भीतर, कई संस्कृतियों ने निष्कर्ष निकाला है कि कुछ हद तक असहमति वास्तव में एक अच्छी बात हो सकती है। केवल सबसे निरंकुश शासन ही असहमत लोगों के लिए लगभग कोई सहिष्णुता नहीं देता है।

लेकिन इसका मतलब यह है कि मूल्य प्रणाली ही महत्वपूर्ण चीज है। सहिष्णुता के गुण मूल्य प्रणाली पर ही परजीवी हैं। और कोई भी समाज, माफ कीजिए, चाहे वह कितना भी सहिष्णु क्यों न हो, कहीं न कहीं सीमाएं तय करता ही है।

उदाहरण के लिए, पश्चिमी संस्कृति विविध यौन गतिविधियों के लिए बेहद खुली है, लेकिन सभी पश्चिमी देश बाल यौन शोषण के मामले में सीमा रेखा खींचते हैं। भगवान का शुक्र है। हालाँकि, इस समय पश्चिमी दुनिया के अधिकांश हिस्सों में सही और गलत, अच्छाई और बुराई, पवित्रता और पाप पर बहुत कम सांस्कृतिक-व्यापक आम सहमति है, जबकि सहिष्णुता को नैतिक सोपान में सबसे ऊंचे स्थान पर रखा गया है।

ऐसा नहीं है कि हमने यह कदम जानबूझकर उठाया है। बल्कि, मैंने जिन कारणों को अन्यत्र रेखांकित करने का प्रयास किया है, उनके कारण सहिष्णुता सत्य, नैतिकता या किसी भी व्यापक रूप से स्वीकृत मूल्य प्रणाली से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। सहिष्णुता एक सर्वोच्च अच्छाई बन जाती है, संस्कृति के देवताओं में सर्वोच्च ईश्वर, अस्तित्व के एक ऐसे क्षेत्र में जो अक्सर मात्र रूढ़िवादिता के आधार पर तर्क करता है, जिसके बहुत कम अन्य व्यापक रूप से स्वीकृत वांछनीय लक्ष्य होते हैं। जटिल विडंबना यह है कि जो लोग इस नई सहिष्णुता के सर्वोच्च गुण को दृढ़ता से मानते हैं, वे मोटे तौर पर उन लोगों के प्रति अत्यधिक असहिष्णु होते हैं जो उनसे सहमत नहीं होते हैं।

इस भ्रमण में शामिल होने का मेरा उद्देश्य यह इंगित करना है कि इस नई असहिष्णु सहिष्णुता को उखाड़ फेंकना एक ऐसे मूल्य प्रणाली को खोजने पर निर्भर करता है जो नई सहिष्णुता से कहीं अधिक कुछ को महत्व देता है। समलैंगिक विवाह को कानून में शामिल करने की समझदारी या अन्यथा, इस पर परिपक्व और निरंतर बहस करना मुश्किल है, जब एक पक्ष, सार के मुद्दों पर संघर्ष करने के बजाय, दूसरे पक्ष को असहिष्णु के रूप में खारिज कर देता है और ऐसा करने के लिए संस्कृति में उसकी सराहना की जाती है। अनियंत्रित, यह नई सहिष्णुता जल्द या बाद में कई लोगों को जंजीरों में जकड़ देगी।

इसे चुनौती देने के लिए, एक सांस्कृतिक मूल्य प्रणाली होनी चाहिए जिसे नई सहिष्णुता से ज्यादा कीमती, उच्चतर अच्छाई माना जाए। और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक तत्वों में से एक है पाप के बारे में एक मज़बूत दृष्टिकोण का पुनर्गठन और इसलिए, संस्कृति में अच्छाई और बुराई। संक्षेप में, पाप पर बाइबिल की शिक्षा का समकालीन महत्व सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है, सबसे पहले, जब बाइबिल के भीतर पाप का स्थान समझा जाता है, और दूसरा, जब हम महसूस करते हैं कि बाइबिल पाप के बारे में जो कहती है, उसके अनुसार हमारी संस्कृति को फिर से आकार देने की कितनी सख्त ज़रूरत है।

डी.ए. कार्सन का निबंध। मुझे उम्मीद है कि आपको यह शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक और चेतावनी देने वाला लगा होगा, जैसा कि मुझे लगा। फॉलन नामक उसी पुस्तक में, जिसका मैंने मॉर्गन के साथ सह-संपादन किया था, उनके पूर्व गुरु जॉन डब्ल्यू. महोनी ने ए थियोलॉजी ऑफ़ सिन फॉर टुडे लिखा था।

यदि हम पाप पर पतन के बाद के परिप्रेक्ष्य को लें, तो दूसरे संदर्भ में, मैंने फिलाडेल्फिया में वेस्टमिंस्टर सेमिनरी के रिचर्ड गैफेन के लिए उनके बुद्धिमान लेखन की सराहना करते हुए तर्क दिया है कि शास्त्रों में सबसे महत्वपूर्ण अंतर इब्रानियों 1:1, और 2 में संक्षेपित नहीं है, यानी पुराना नियम, नया नियम, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण है पतन से पहले, पतन के बाद, क्योंकि पतन और परिणामी पाप और उसके परिणाम सब कुछ बदल देते हैं। बेशक, इसके भीतर दो नियम इसका बहुत महत्वपूर्ण विभाजन हैं। पतन के बाद के परिप्रेक्ष्य के संबंध में, पाप के कई अलग-अलग पहलू और अभिव्यक्तियाँ हैं।

पवित्रशास्त्र में पाप के लिए कई शब्दों का इस्तेमाल किया गया है और इसे कई अलग-अलग तरीकों से वर्णित किया गया है। निम्नलिखित बाइबिल के उपयोग का सारांश है और पतन के बाद की वास्तविकता की व्याख्या के रूप में कार्य करता है। तो, हम वास्तव में अब पाप के बाइबिल विवरण से निपट रहे हैं।

पाप, प्रभु की महिमा करने में विफलता और उसके स्थापित मानकों के विरुद्ध विद्रोह का कार्य है। यह दोहरी वास्तविकता परमेश्वर की धार्मिकता की अनुपस्थिति और मानवीय विद्रोह की उपस्थिति दोनों को दर्शाती है। प्रत्येक पाप, विचार, शब्द या कार्य में ये दोहरे घटक होते हैं।

बाइबल के शब्दों का शाब्दिक विश्लेषण स्पष्ट रूप से इस द्वंद्व को प्रदर्शित करता है। पवित्रशास्त्र पाप के लिए कई अलग-अलग शब्दों का उपयोग करता है, जो इस अवधारणा की समृद्धि और महत्व का संकेत है। हालाँकि, ग्रीक और हिब्रू शब्दों के बीच अर्थ की विविधता को दो तक सीमित किया जा सकता है।

पहले वे भाव हैं जो पाप को असफलता, कमी के रूप में देखते हैं। इस अर्थ में, पाप परमेश्वर के नियम का पालन करने में असफलता है। अधर्म, 1 यूहन्ना 3:4। परमेश्वर की धार्मिकता की कमी, रोमियों 1:18। परमेश्वर के प्रति श्रद्धा का अभाव, रोमियों 1:18, यहूदा 15।

जानने से इंकार, इफिसियों 4:18 . और, सबसे खास बात, परमेश्वर की महिमा से वंचित होना, लक्ष्य से चूक जाना, रोमियों 3:23. इस प्रकार, पाप किसी भी मानवीय कार्य में वह गुण है जो उसे प्रभु की महिमा करने में विफल बनाता है। उदाहरण के लिए, क्या हममें से कोई यह पुष्टि कर सकता है कि हमने परमेश्वर से पूरी तरह से प्रेम किया है जैसा कि वह चाहता है? ऐसा दावा करना मूर्खता होगी। जब परमेश्वर, दूसरों और खुद के लिए, यहाँ तक कि खुद के लिए भी, पूर्ण प्रेम का तत्व हमारे सभी कार्यों, उद्देश्यों, क्षमा करें, हमारे सभी दृष्टिकोणों, उद्देश्यों, शब्दों या कार्यों से गायब है, तो यह उन्हें प्रभु के सामने घृणित बनाता है।

ऑगस्टीन ने पाप के इस नकारात्मक पहलू को अभाव कहा, सृष्टि में निहित अच्छे गुण का अभाव। उन्होंने इस अभाव को सभी पापों का सार भी बताया। सिटी ऑफ़ गॉड, ऑगस्टीन का सिटी ऑफ़ गॉड, 9.13, अध्याय 9, खंड 13।

शब्दों का एक और समूह पाप के सकारात्मक या सक्रिय पहलू को दर्शाता है। निर्धारित मार्ग से अतिक्रमण या विचलन, अपराध, और अवज्ञा में परिणामित होने वाली सुनवाई जैसे शब्द ईश्वर की आज्ञाओं के प्रकाश में गतिशील प्रतिरोध या अवज्ञा पर जोर देते हैं। बगीचे में आदम के कार्य को इनमें से प्रत्येक शब्द द्वारा दर्शाया गया है।

रोमियों 5:14 , अपराध । अवज्ञा , रोमियों 5: 15-18, अपराध, अवज्ञा , 5:19, अपराध, 5:15-18। प्रत्येक मामले में, एक टूटा हुआ कानून ध्यान का केंद्र है। पतन के बाद का पाप परमेश्वर के आदर्श मानक को प्रतिबिंबित करने में विफलता के साथ-साथ उसके मानकों के विरुद्ध विद्रोह का कार्य भी है।

इफिसियों 2:1 में पौलुस ने पाप के दोहरे पहलू पर भी ज़ोर दिया, जिसमें उसने आत्मिक मृत्यु का वर्णन किया जो कि अपराधों और पापों में व्यक्त होती है। पाप व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों है। परिभाषा के अनुसार, पाप एक जानबूझकर किया गया कार्य है।

इसकी शुरुआत अदन के बगीचे में एक व्यक्तिगत अपराध से हुई। बाइबल के अलग-अलग शब्द मुख्य रूप से व्यक्तिगत पाप पर लागू होते हैं। रोमियों 1:3 में पाप की सार्वभौमिकता पर पौलुस की शिक्षा में भी व्यक्तियों के कार्यों या शब्दों का संदर्भ है।

हालाँकि, पाप सिर्फ व्यक्तिगत अपराध से कहीं ज़्यादा है। पतन के बाद की वास्तविकता में सामाजिक गलतियाँ भी शामिल हैं। खास तौर पर, सामाजिक पाप के दो आयाम हैं।

सबसे पहले, पाप का प्रत्येक व्यक्तिगत कार्य पूरे मानव नेटवर्क को परेशान करता है। व्यक्तिगत शब्द और कार्य सामाजिक परिणामों को गति प्रदान करते हैं। सभी मानवीय विकल्प आपस में जुड़े हुए हैं।

फ्रेडरिक ब्यूचनर ने मानवीय संदर्भ की तुलना एक मकड़ी के जाले से की है जिसमें हर गड़बड़ी, उद्धरण, पूरी चीज़ को हिलाकर रख देती है, उद्धरण बंद करें। एक आदमी, आकान के पाप के परिणामस्वरूप, ऐ नामक एक छोटी सी जगह पर इस्राएल की हार हुई, जोशुआ 7। समकालीन सेटिंग में, परिवारों और बड़े सांस्कृतिक संदर्भ पर घरेलू हिंसा, घृणा अपराध, पोर्नोग्राफी और तलाक के नतीजों का पता लगाना मुश्किल नहीं है। सामाजिक पाप उन सामाजिक संरचनाओं में भी परिलक्षित होता है जो पूर्वाग्रह, घृणा और कट्टरता की बुराइयों को बढ़ावा देते हैं।

उस बड़ी प्रकाशन कंपनी के बारे में क्या जो संपादकों और पत्रकारों पर कहानी को सबसे पहले बताने के लिए अनुचित दबाव डालती है, चाहे उनके तरीके कितने भी अनैतिक क्यों न हों? कई परिस्थितियाँ दिमाग में आती हैं जिनमें संगठन की रक्षा के लिए धोखे की संस्कृति बनाई जाती है। उन संस्थानों के बारे में क्या जो अविश्वास की संस्कृति से प्रभावित हैं, जो गपशप और भ्रांतियों के दुष्चक्र में कर्मचारियों को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा करते हैं? इज़राइल में भविष्यवाणी मंत्रालय का एक प्रमुख घटक सामाजिक पापों का सामना करना था, जिसने वाचा का उल्लंघन किया और प्रभु के न्याय को भड़काया। धर्मत्याग से लेकर न्याय, पश्चाताप और पुनर्स्थापना के चक्र तक, न्यायाधीशों की अवधि मूर्तिपूजा की ओर निरंतर सामाजिक बहाव को दर्शाती है।

एक स्पष्टीकरण, पुराने नियम के विद्वानों से लाभ उठाने के मेरे अध्ययन से मुझे पता चलता है कि शायद न्यायियों में केवल एक ही स्थान है जहाँ वास्तविक पश्चाताप है, या बल्कि, निराशा में भगवान से रोना है कि वह सजा को कम कर देगा, कि वह दर्द को कम कर देगा, भगवान के प्रति सच्चे दिल से पश्चाताप नहीं। यारोबाम के अपराधों के कारण इस्राएल को परमेश्वर के न्याय के अधीन लाया गया था। उद्धरण, वह यारोबाम के पापों के कारण इस्राएल को छोड़ देगा, जो उसने किए थे और जिसके साथ उसने इस्राएल को पाप कराया था।

1 राजा 14:16. बार-बार तुम ऐसी बातें सुनते हो। उसने अपने पिता यारोबाम के पापों को बार-बार दोहराया।

बाद के भविष्यवक्ताओं में, आमोस ने अन्याय के खिलाफ प्रचार किया। आमोस 5:12. "क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अपराध बहुत हैं और तुम्हारे पाप बहुत हैं। तुम धर्मी को सताते हो, घूस लेते हो और दरवाज़े पर गरीबों को बरबाद करते हो।"

यशायाह ने राष्ट्र के ईश्वर से विमुख होने को उजागर किया। यशायाह 1:2 से 4. साथ ही कानूनी व्यवस्था में भ्रष्टाचार। यशायाह 10:1 से 4. यिर्मयाह ने अनाथों के साथ किए गए व्यवहार के लिए राष्ट्र को दोषी ठहराया। यिर्मयाह 5:28-29.

योना की पुस्तक यहूदी राष्ट्रवाद के नकारात्मक पक्ष को उजागर करती है, एक ऐसा संप्रदायवाद जिसने राष्ट्रीय अविश्वास और घृणा को जन्म दिया।

तीसरा, पाप एक जानबूझकर किया गया कार्य है, जैसा कि मानव अस्तित्व की वर्तमान स्थिति है। पतन के बाद की वास्तविकता हमारे विद्रोही अस्तित्व की संपूर्णता को शामिल करती है, हम क्या करते हैं, साथ ही हम कौन हैं।

पाप एक व्यक्तिगत कार्य है। यह व्यक्तिगत पसंद से उत्पन्न होता है और इसलिए, यह जिम्मेदारी का विषय है। यह जेकेल 18:4. जो छात्र परीक्षा में नकल करता है, वह स्कूल के आचार संहिता का उल्लंघन करता है, लेकिन साथ ही परमेश्वर के नैतिक मानकों का भी उल्लंघन करता है।

जो पति व्यभिचार करके अपनी वैवाहिक प्रतिज्ञाओं को तोड़ता है, वह जानबूझकर पाप कर रहा है। प्रत्येक मामले में, एक व्यक्तिगत चुनाव किया जाता है। पाप एक जानबूझकर किया गया कार्य है।

पाप का हर कार्य पापपूर्ण स्थिति या अस्तित्व की स्थिति से निकलता है, जो पाप भी है। हृदय की कठोरता और अविश्वास पाप हैं। इब्रानियों 3:12.

यह एक दुष्ट अविश्वासी हृदय की बात करता है जो जीवित परमेश्वर से दूर हो जाता है। उद्धरण समाप्त। व्यक्तिगत पाप केवल अलग-अलग घटनाएँ नहीं हैं।

हमारे सभी कार्य और शब्द दर्शाते हैं कि हम कौन हैं। मत्ती 7:17. बुरा पेड़ बुरा फल लाता है।

हम अपने पाप के कार्यों के साथ-साथ जिस पाप की स्थिति में हम रहते हैं उसके लिए पूरी तरह से जिम्मेदार हैं, भले ही हम खुद को बदल नहीं सकते। "क्या कूशी अपनी खाल या चीता अपने धब्बे बदल सकता है? तो तुम भी जो बुराई करने के आदी हो, भलाई कर सकते हो, परन्तु तुम नहीं कर सकते।" यिर्मयाह 13:23.

बाइबल भी पाप और पाप शब्दों का इस्तेमाल बहुत ही सावधानी से करती है। उदाहरण के लिए, 1 यूहन्ना 1:8 से 10. एक पाप की स्थिति है, और दूसरा पाप के अलग-अलग कार्यों को संदर्भित करता है।

रॉबर्ट कल्वर ने इस अंतर को स्पष्ट किया। पवित्रशास्त्र का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर पाप और पापों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर का पता चलता है। इसे दो समान-ध्वनि वाले लेकिन सूक्ष्म रूप से भिन्न अंशों के संबंध में स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

अर्थात्, वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। मत्ती 1 21. और उद्धृत करें, देखो, परमेश्वर का मेम्रा जो जगत का पाप उठा ले जाता है।

यूहन्ना 1:29. पहले के पाप स्पष्ट रूप से लोगों के कई बुरे कामों का संदर्भ हैं। बाद का संदर्भ, दुनिया का पाप, परमेश्वर के सामने दुनिया के अपराध की बात करता है जिसमें सभी लोग भागीदार हैं।

रॉबर्ट कल्वर, सिस्टमैटिक थियोलॉजी। इसके लिए धर्मशास्त्रीय व्याख्या को मूल पाप कहा जाता है। इस सिद्धांत में उत्पत्ति 3:1 और उसके बाद आदम द्वारा किए गए देशद्रोह का ऐतिहासिक कृत्य शामिल है।

तथ्य यह है कि सभी लोग ईश्वर से अलग होकर मानव अस्तित्व में प्रवेश करते हैं। भजन 51.5. इफिसियों 2.1. और आदम के पाप और ईश्वर के खिलाफ विद्रोह की निरंतर स्थिति के कारण दोषी घोषित किए जाते हैं जिसमें हम रहते हैं और जिससे सभी पापपूर्ण कार्य उत्पन्न होते हैं। हम, उद्धरण, स्वभाव से, क्रोध के बच्चे हैं।

इफिसियों 2:3. उद्धरण, मूल पाप वह पाप नहीं है जो कोई व्यक्ति स्वयं करता है। यह मनुष्य के स्वभाव और अस्तित्व में ही रहता है, इसलिए भले ही किसी व्यक्ति के मन में कभी भी एक भी बुरा विचार न आया हो, उसके होठों से कभी कोई बेकार शब्द न निकला हो, और उसके हाथों से कोई बुरा काम न निकला हो, फिर भी इस पाप के कारण मनुष्य का स्वभाव भ्रष्ट हो जाएगा। यह हमारे अंदर पैदा होता है और सभी वास्तविक पापों का स्रोत है, चाहे वे बुरे विचार, शब्द या कर्म हों।

नज़दीकी उद्धरण। वाल्टर नेगल, पाप ईश्वर के क्रोध का कारण है। सी.टी.एम., 1 अक्टूबर, 1952।

फिलिप ह्यूजेस बताते हैं, उद्धरण, मूल पाप का सिद्धांत यह मानता है कि पहले मनुष्य, आदम का पहला पाप, जो पतन का कारण था, एक निश्चित अर्थ में सभी मानव जाति का पाप है और तदनुसार, मानव स्वभाव उस पाप के भ्रष्टाचार से संक्रमित है और पूरी मानव जाति इसके अपराध को वहन करती है। पाप अगली श्रेणी को दर्शाता है, जो मानव हृदय का गहरा भ्रष्टाचार है। बाइबल पाप में मानवीय स्थिति का वर्णन करने के लिए कई ग्राफिक रूपों का उपयोग करती है, जिसे धर्मशास्त्रीय रूप से भ्रष्टा कहा जाता है।

शारीरिक बीमारियाँ जैसे अंधापन, दृष्टि की कमी, बहरापन, सुनने की क्षमता की कमी, गूंगापन, और बोलने की क्षमता की कमी प्रत्येक मामले में एक महत्वपूर्ण गायब घटक को उजागर करती हैं। ये शारीरिक स्थितियाँ अपने आप में पापपूर्ण नहीं हैं, यीशु ने यूहन्ना 9 में स्पष्ट रूप से इसका संकेत दिया है, लेकिन पापियों की आध्यात्मिक स्थिति के चित्रण के रूप में कार्य करते हैं। पाप के

लिए रूपक प्रचुर मात्रा में हैं और मानव भ्रष्टता को समझने के लिए एक महान स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

गैरी एंडरसन ने पुराने नियम में पाप को बोझ के रूप में महत्व देने से लेकर नए नियम में कर्ज पर जोर देने तक के रूपकों में बदलाव का दस्तावेजीकरण किया है। मैथ्यू 6:12, प्रभु की प्रार्थना में, और हमारे कर्जों को माफ कर दो जैसे हम अपने कर्जदारों को माफ करते हैं। मानवीय स्थिति के इन विवरणों में, मानव हृदय के बाइबिल विश्लेषण से अधिक स्पष्ट कुछ नहीं हैं।

यीशु ने हृदय को एक फव्वारे के रूप में चित्रित किया है जो सभी प्रकार के पापों को बाहर निकालता है, मत्ती 15:19 से 20, मरकुस 7:21 और 22. मुझे कम से कम उनमें से एक को पढ़ना चाहिए। चाहे आप अपने हाथ धोएँ या नहीं, इससे आप आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध नहीं होते, यीशु कहते हैं, लेकिन जो मुँह से निकलता है वह हृदय से निकलता है, और यह एक व्यक्ति को अशुद्ध करता है।

क्योंकि बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा हृदय से ही निकलती है। ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु बिना हाथ धोए भोजन करना किसी को अशुद्ध नहीं करता। यिर्मयाह 17:9 में हृदय को धोखेबाज, अत्यंत बीमार और पूरी तरह से अपारदर्शी बताया गया है।

उद्धरण, इसे कौन समझ सकता है? अगली आयत कहती है, मैं, प्रभु, ने हृदय की खोज की। बाढ़ से पहले की बड़ी दुष्टता हृदय की भ्रष्टता से आई, उत्पत्ति 6:5 और 8:21। नीतिवचन 21:4 घोषणा करता है, "घमंडी आँखें और घमण्डी हृदय। दुष्टों का दीपक पाप है।" बुरे काम हृदय से शुरू होते हैं, यहजेकेल 11:21।

"परन्तु जो लोग अपने घृणित कामों और घिनौने कामों की ओर मन लगाते हैं, मैं उनके चालचलन का दण्ड उन्हीं के सिर पर डालूंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।" होशे 10:2 में लोगों को इसलिए दोषी माना गया है क्योंकि उनके हृदय अविश्वासी हैं।

यीशु ने सिखाया कि जो अपने हृदय में किसी स्त्री के प्रति अनुचित इच्छा रखता है, वह हृदय से उसके साथ व्यभिचार करता है, मत्ती 5:28। पौलुस ने दावा किया कि अपने हठ के कारण, मैं उद्धृत कर रहा हूँ, एक पश्चाताप रहित हृदय, आप क्रोध और विद्रोह के दिन और क्रोध के दिन और परमेश्वर के धर्मी न्याय के प्रकाशन के दिन अपने लिए क्रोध जमा कर रहे हैं, रोमियों 2 :5। इब्रानियों के लेखक ने हृदय को अविश्वासी कहा, इब्रानियों 3:12। समग्र रूप से व्याख्या की जाए तो, हृदय मनुष्यों में एक अलग तंत्र नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण व्यक्ति है जिसे उसके अस्तित्व के सबसे गहरे पहलू से देखा जाता है।

इस प्रकार, एक व्यक्ति के जीवन की पापपूर्ण गतिविधियाँ, एक व्यक्ति का जीवन परमेश्वर के सामने व्यक्ति के हृदय की स्थिति को दर्शाता है। हमारे अगले व्याख्यान में, मैं इस पाठ्यक्रम को जारी रखूँगा और इन जैसे विषयों पर चर्चा करूँगा। पाप में एक साथ कमीशन, चूक और अपूर्णता शामिल है।

पाप में हमारा स्वभाव और हमारी अवज्ञाकारी हरकतें शामिल हैं। पाप में अपराध बोध भी शामिल है, जो एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है। पाप बाइबल के परमेश्वर और उसके धार्मिक चरित्र का व्यक्तिगत अपमान है।

पाप ईश्वर की सृष्टि में एक दुष्ट तत्व है, और यह हमेशा मौजूद नहीं रहेगा। पाप सृष्टिकर्ता की छवि को दुनिया के सामने लाने में विफलता है। पाप ईश्वर के क्रोध को आमंत्रित करता है।

मैं अपने नोट्स से यह जोड़ना चाहता हूँ कि पाप धोखेबाज़ है। और अंत में, पाप की मानव इतिहास में एक निश्चित शुरुआत थी और अंततः उसे पराजित किया जाएगा। इन बातों में आपके अच्छे ध्यान और रुचि के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10 है, पाप का समकालीन महत्व। महोनी, आज के लिए पाप का धर्मशास्त्र: पाप का बाइबिल विवरण।